आपातकाल
में
सृजन फुलवारी

कैलाश चन्द्र यादव

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

कैलाश चन्द्र यादव

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-154-1

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण-2020, कैलाश चन्द्र यादव

मूल्य-50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY KAILASH CHANDRA YADAV

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	इस मोड़ पर ले आयेगी जिन्दगी पता न था	6
2.	उछीड़ हुई मयख़ाने में	7
3.	थोड़ी देर थोड़ी देर ठहर जा मेरे ओ सनम	8
4.	न मुझे तेरी ख़बर न तुझे मेरी ख़बर	9
5.	खटखटाते रहिए दरवाजा दोस्तों	10
6.	न कनकैया न पुरबैया न तू सोनचिरैया	11
7.	तुम हमको नहीं जानते, कहना क्यों नहीं मानते	12
8.	तुम बजाओ तालियां मैं बजाऊं सीटी	13
9.	जैसे जैसे इन्सां बदला वैसे कुदरत बदली	14
10.	ठण्डी ठण्डी हैं हवाऐं ले न डूबें मुझको	15
11.	11: पिंजड़े में कैद हैं हम जायें तो कहां जायें	16
12.	12: दिल्ली देखी पटना देखा देखा है हरिद्वार	17
13.	13. टुकड़े टुकड़े सी हो गयी जिन्दगी	18
14.	14. ये कैसा इम्तहान-इम्तहान दोस्तों	19
15.	15. हवायें ताज़ा ताज़ा थी किसी ने घोला ज़हर आज	20
16.	ए जिन्दगी समझौता कर लिया कर लिया	21

इस मोड़ पर ले आयेगी जिन्दगी पता न था

इस मोड़ पर ले आयेगी जिन्दगी पता न था
मुझ पे क़हर बरपायेगी बन्दगी पता न था

जो हुआ अच्छा हुआ जो हो रहा अच्छा ही है
निखरा हुआ है आसमां बदली हुई ज़मीं भी है
चिलमन से वो मुस्काएगी प्रेयसी पता न था
मुझ पे क़हर बरपायेगी बन्दगी पता न था

फ़ासले ऐसे हुए मिल सकें न उम्र भर
ए ख़ुदा ये क्या हुआ जागता मैं रात भर
हर राह पर तड़फायेगी बेबसी पता न था
मुझ पे क़हर बरपायेगी बन्दगी पता न था

फ़लसफ़ा प्यार का मिल गया है ख़ाक़ में
अब दुआ मुश्किल हुई कुछ किया है आपने
पैग़ाम न पहुंचायेगी बेख़ुदी पता न था
मुझ पे क़हर बरपायेगी बन्दगी पता न था

जुड़कर भी जो जुड़ते नहीं रिश्ते हैं क्या वो नाम के
टूटे से जो टूटे नहीं बन्धन हैं क्या वो आप से
ऐसे ये रंग ले आयेगी आशिकी पता न था
मुझ पे क़हर बरपायेगी बन्दगी पता न था

उछीड़ हुई मयख़ाने में

उछीड़ हुई मयख़ाने में जब छोड़ दी दीवाने ने
मेहमान सारे लौट गये अभी है बची पैमाने में

किस किसकी बातें मैं करूं, किस किसका किस्सा मैं कहूं
सभी मानते मनमीत मुझे, किस किसका हिस्सा मैं बनूं
मदहोश वो गलियां छूट गयीं अब सांस ली परवाने ने
मेहमान सारे लौट गये अभी है बची पैमाने में

पीता था मैं भी बैठकर, कल तक जिनके वास्ते
ग़म का साथी कोई नहीं, अब अलग अलग हैं रास्ते
कब भोर हुई कब शाम ढली जंग छेड़ दी अफ़साने ने
मेहमान सारे लौट गये अभी है बची पैमाने में

हैरां हूं मैं यह देखकर. कुछ फूल मिले मुझे सेज़ पर
ए दोस्त तेरा शुक्रिया, संग संग चले कभी रेत पर
कोई भूल हुई अन्जाने में, बड़ी देर लगी घर जाने में
मेहमान सारे लौट गये अभी है बची पैमाने में

वो चुपके चुपके आयी, वो चुपके चुपके चली गयी
मैं सहमा सहमा था जरा, वो लम्हा लम्हा कहे गयी
बिछड़े मिले मसाने में, हुई देर अर्थी उठाने में
मेहमान सारे लौट गये अभी है बची पैमाने में।

3.

थोड़ी देर थोड़ी देर ठहर जा मेरे ओ सनम

थोड़ी देर थोड़ी देर ठहर जा मेरे ओ सनम
थोड़ी देर थोड़ी देर ठहर जा ओ मेरे सनम
मिलना है बिछुड़ना यही रीत दुनिया की सनम
मिलना है बिछुड़ना यही रीत दुनिया की सनम

सागर में मोती है, बादल में बिजली है
मनवा में उमंगे हैं, फूलों पर तितली है
जग छूटे रब रूठे इधर आ मेरे ओ सनम
मिलना है बिछुड़ना यही रीत दुनिया की सनम

मौसम है सर्दी का, बालम तू मर्जी का
हर ग़म की दवा तू है, उल्फ़त तू जाने क्या
बाहों में बाहों में मचल जा मेरे ओ सनम
मिलना है बिछुड़ना यही रीत दुनिया की सनम

थोड़ी सी मैं पागल हूँ. थोड़ा सा है पागल तू
कैसा तू बाजीगर, हर सू है तेरी खुशबू
सपनों सा है मिलन अजीब मसला ओ सनम
मिलना है बिछुड़ना यही रीत दुनिया की सनम

अब तू ही है मंजिल, कोई खड़ी हो मुश्किल
तुझ बिन जी नहीं सकती, तोड़ नहीं मेरा दिल
तू मुझमें मैं तुझमें, खो जायें आ जा ओ सनम
मिलना है बिछुड़ना यही रीत दुनिया की सनम

न मुझे तेरी ख़बर न तुझे मेरी ख़बर

न मुझे तेरी ख़बर न तुझे मेरी ख़बर
न मुझे तेरी ख़बर न तुझे मेरी ख़बर
जो इम्तहां इधर वही इम्तहां उधर
न मुझे तेरी ख़बर न तुझे मेरी ख़बर

हर सू धुंआ धुआं हर लम्हा बेबसी
दुश्मन छिपा छिपा नाकाम आशिकी
है झुकी मेरी नज़र है झुकी तेरी नज़र
है झुकी मेरी नज़र है झुकी तेरी नज़र
न मुझे तेरी ख़बर न तुझे मेरी ख़बर

सुबह मचल रही यूँ ही शाम ढल रही
तन्हाईयां जवां हैं तेरी बात चल रही
सहमा उधर ज़िग़र सहमा इधर ज़िग़र
सहमा उधर ज़िग़र सहमा इधर ज़िग़र
न मुझे तेरी ख़बर न तुझे मेरी ख़बर

हर गुल खिला खिला ये कैसा इम्तहां
खुशबू चमन से जुदा ये कैसा गुलिस्तां
न मुझे मिली डगर न तुझे मिली डगर
न मुझे मिली डगर न तुझे मिली डगर
न मुझे तेरी ख़बर न तुझे मेरी ख़बर

खटखटाते रहिए दरवाजा दोस्तों

खटखटाते रहिए दरवाजा दोस्तों
खटखटाते रहिए दरवाजा दोस्तों
मुस्कुराते रहिए घर ही घर में दोस्तों
मुस्कुराते रहिए घर ही घर में दोस्तों

मुमकिन उनसे ये मुलाक़ात न हो
पहले जैसी इतनी हंसी रात न हो
गुनगुनाते रहिए नया कोई राग दोस्तों
मुस्कुराते रहिए घर ही घर में दोस्तों

हलके हलके ही सही जीतेंगे ये जंग
जरा दुश्मन से कहो पक्के मेरे हैं रंग
हमने सीखा है निभाना हर वादा दोस्तों
मुस्कुराते रहिए घर ही घर में दोस्तों

समझो समझो अपनों की हक़ीक़त
अपने अपने न बने अपनों की मुसीबत
तन्हा गाते रहिए अब गाना दोस्तों
मुस्कुराते रहिए घर ही घर में दोस्तों

दीये उल्फत के जलायेंगे सभी हम
शिकवे दिल के मिटायेंगे सभी हम
संग मिलकर चलिए मेरे प्यारे दोस्तों
मुस्कुराते रहिए घर ही घर में दोस्तों

न कनकैया न पुरबैया न तू सोनचिरैया

न कनकैया न पुरबैया न तू सोनचिरैया
न तू राजा न तू ख़्वाजा न तू है रमैय्या
सबको राम राम भैया, सबको राम राम भैया

काली काली आँखें हंसीन तेरा चेहरा
बिखरी तेरी जुल्फें घटाओं ने घेरा
छिपा कुछ दिल में है कह न पायी
काहे ए लड़की तू है घबरायी
तू महलों की रहने वाली करती ता था थैया
वक्त पड़े तो काम न आये ऐसा है रूपैय्या
सबको राम राम भैया, सबको राम राम भैया

देखे नहीं हैं बेटा हसीनों के नख़रे
इनके ही कारन होते सब लफ़ड़े
इनके तीखे तीर का कोई काट नहीं होता
चर्चा भी इनका खुले आम नहीं होता
ये अलबेली वो चमेली वो है बिल्कुल गैया
तीर चला के ये छिप जायें, बचा ले मेरी मैया
सबको राम राम भैया, सबको राम राम भैया

आया तेरे दर पर कैसा यह जोगी
देता है दुआऐं भला तेरा हो भी
कैसी मुश्किल में फंसी है दुनिया
कर कुछ ऐसा कि बदलें ये घड़ियां
न चबन्नी न अठन्नी न माँगे रूपैय्या
थोड़ा सा प्यार मांगे, मांगे पल भर छैंया
सबको राम राम भैया, सबको राम राम भैया

तुम हमको नहीं जानते, कहना क्यों नहीं मानते

तुम हमको नहीं जानते, कहना क्यों नहीं मानते
तुम क्या जानो प्यार है क्या, प्यार है क्या इक़रार है क्या
तुम रब को नहीं मानते, रातों को तन्हा जागते
तुम हमको नहीं जानते, कहना क्यों नहीं मानते

न ही देवता मंदिर में, न ही ख़ुदा है मस्जिद में
न ही नानक ननकाना, न ही ईशा है गिरजा में
धरम करम नहीं जानते,छिपे छिपे कहाँ भागते
तुम क्या जानो प्यार है क्या, प्यार है क्या इकरार है क्या
तुम रब को नहीं मानते, रातों को तन्हा जागते
तुम हमको नहीं जानते, कहना क्यों नहीं मानते

पहचानो इस इन्सां को, इन्सां एक फ़रिश्ता है
रब की सूरत देखी क्या, इन्सां में रब दिखता है
डरते हो मेरे राम से, कैसी दुआ तुम मांगते
तुम क्या जानो प्यार है क्या, प्यार है क्या इक़रार है क्या
तुम रब को नहीं मानते, रातों को तन्हा जागते
तुम हमको नहीं जानते, कहना क्यों नहीं मानते

खोज ही लेंगे हम तुमको, कहीं जा तुम छिप जाओ
नमन है ऐसी हिम्मत को, वतन के ख़ातिर लुट जाओ
खोजेंगे नये रास्ते, नहीं हम जोगी हैं नाम के
तुम क्या जानो प्यार है क्या, प्यार है क्या इकरार है क्या
तुम रब को नहीं मानते, रातों को तन्हा जागते
तुम हमको नहीं जानते, कहना क्यों नहीं मानते।

तुम बजाओ तालियां मैं बजाऊं सीटी

Good Morning Sweety Sweety
तुम बजाओ तालियां मैं बजाऊं सीटी

लो आ गया गली में एक बन्जारा
अरे गा रहा लेकर के एक तारा
रहो झांकते अपनी अपनी खिड़की से
ले लो दुआऐं संकट में जग सारा
Good Morning naughty Pretty
Good Morning Sweety Sweety
तुम बजाओ तालियां मैं बजाऊँ सीटी
Good Morning Sweety Sweety

जिन्दगी है जिन्दगी परवाह करो
बन्दगी है बन्दगी घर में करो
साथ जीना साथ मरना अब नहीं
फूल भी हैं दरमियां सोचा करो
My Darling Sweety Sweety
Good Morning Sweety Sweety
तुम बजाओ तालियां मैं बजाऊँ सीटी
Good Morning Sweety Sweety

चन्द दिनों की हैं अभी तन्हाईयां
फिर बजेंगी प्यार की शहनाईयां
हां यही है प्यार का दस्तूर अब
रह न पायेंगी मेरी परछाईंयाँ
Good Morning Dada Dadi
Good Morning Mummy Daddy
तुम बजाओ तालियाँ मैं बजाऊं सीटी
Good Morning Sweety Sweety

जैसे जैसे इन्सां बदला वैसे कुदरत बदली

जैसे जैसे इन्सां बदला वैसे क़ुदरत बदली
यहाँ की बर्फी नकली, यहाँ मिले मावा नकली
दुनिया में अमेरिका देखा या देखा मैंने इटली
जहां का राजा नकली, वहाँ है प्यादा नकली

ऊंची ऊंची ईमारतें लम्बे लम्बे लोग
गोरी गोरी सूरतें सबकी अपनी सोच
बना बना कर बम सरीखे बेच रहे दुनिया को
है बाजुओं में कितना दम बचा ले अपनों को
आज तड़फता उनको देखा जैसे जलबिन मछली
यहाँ की बर्फी नकली, यहां मिले मावा नकली

रौब से हम कहते थे मेड इन चाइना
दिखा दिया उसने सारे जग को आइना
जादू कैसा चला रहा देकर एक बीमारी
शोला आज बनी देखो कल तक थी चिंगारी
बैठे बैठे नचा रहा है जैसे हो कठपुतली
यहां है बर्फी नकली, यहाँ मिले मावा नकली

बना लिया हमने जब ऐसा एक बेक्सीन
ये भी मांगे वो भी मांगे दे दो हमको भीख
छिपा हुआ है वेदों में अमृत का ख़जाना
यारों हम उस देश के बासी माँ गंगा को माना
चांद सितारे अभी वहीं हैं, किसकी नीयत बदली
यहां है बर्फी नकली, यहां मिले मावा नकली

ठण्डी ठण्डी हैं हवाऐं ले न डूबें मुझको

ठण्डी ठण्डी हैं हवाऐं ले न डूबें मुझको
ठण्डी ठण्डी हैं हवाएँ ले न डूबें मुझको
महकी महकी हैं फ़िजाऐं ले न डूबें मुझको
महकी महकी हैं फ़िजाऐं ले न डूबें मुझको

बदली बदली है शहर की आबोहवा
बूटा बूटा है चमन का सहमा सा हुआ
बदली बदली हैं निग़ाहें ले न डूबें मुझको
महकी महकी हैं फ़िजाऐं ले न डूबें मुझको

डर सा लगता है सनम आठों पहर
ढा रहा कोई अपना ही हम पे क़हर
किसी की बद् दुआऐं ले न डूबें मुझको
महकी महकी हैं फ़िजाऐं ले न डूबें मुझको

लम्हा लम्हा है अज़ूबा क्या भी करूं
बदला जीने का तरीका क्या मैं करूं
दिल लगाने की अदाऐं ले न डूबें मुझको
महकी महकी हैं फ़िजाऐं ले न डूबें मुझको

पड़ी सुनसान शहर की हर एक गली
जवां हुई है चमन की हर एक कली
बेअसर हुई हैं दवाऐं ले न डूबें मुझको
महकी महकी हैं फ़िजाऐं ले न डूबें मुझको

पिंजड़े में कैद हैं हम जायें तो कहां जायें

पिंजड़े में कैद हैं हम, जायें तो कहां जायें
पिंजड़े में कैद हैं हम, जायें तो कहां जायें
कब तक रुकें राह में, जायें तो कहां जायें
कब तक रुकें राह में, जाये तो कहां जायें

आगे भी अंधेरा है, पीछे भी अंधेरा है
मझधार में है कश्ती, हर कोई लुटेरा है
हैं कैसे देश में हम, जायें तो कहां जायें
कब तक रुकें राह में, जायें तो कहां जायें

निकलेगा चांद वहीं, जहां आज वो निकला है
निकलेगा सूरज कल, जहाँ आज वो निकला है
हम सह लेंगे हर ग़म. जायें तो कहां जायें
कब तक रुकें राह में हम, जायें तो कहाँ जायें

हम छोड़ आये बस्ती, खुश रहना तुम लोगों
नहीं अपनी वो नारी, निकले हैं बेगाने हो
नफ़रत की बेल हैं हम, जायें तो कहां जायें
कब तक रुकें राह में हम, जायें तो कहां जायें

आकर तुम मय्यत पर, दो फूल चढ़ा देना
अन्जाने में हुई हों, वो भूल भुला देना
हारे हैं रेस में हम, जायें तो कहां जायें
कब तक रुकें राह में हम, जायें तो कहां जायें

दिल्ली देखी पटना देखा देखा है हरिद्वार

दिल्ली देखी पटना देखा, देखा है हरिद्वार
देखा मैंने ऐसा नज़ारा, पहली पहली बार
मथुरा देखी काशी देखा, देखे तीरथ चार
कर लिया है आज किनारा,अपनों ने ही यार

जिन्दगी हुई ज़ुदा ज़ुदा, कोई यहाँ कोई वहाँ
अपना अपना नसीब है, कौन जिया कौन मरा
बेटी देखी बेटा देखा, देखे रिश्तेदार
जिन्दगी का सच यही है, अपने से ही प्यार
मथुरा देखी काशी देखा, देखे तीरथ चार
कर लिया है आज किनारा, अपनों ने ही यार

राजा ही जब बचा नहीं, रंक की बिसात क्या
मस्जिदों में ख़ुदा नहीं, तबलीगी ज़मात क्या
घण्टे बजते मन्दिरों में, आज यूँ ही बेकार
मस्जिद सूनी मन्दिर सूना, सूना है घर द्वार
मथुरा देखी काशी देखा, देखे तीरथ चार
कर लिया है आज किनारा, अपनों ने ही यार

मन मेरे तू गाता चल, वादों को निभाता चल
कैसी हैं ये उदासियां, कोई नहीं अकेला चल
तोड़ भी न ये लक्ष्मण रेखा, दुश्मन करता वार
हो रहा है आज हवा में, कैसा ये व्यापार
मथुरा देखी काशी देखा, देखे तीरथ चार
कर लिया है आज किनारा, अपनों ने ही यार।

टुकड़े टुकड़े सी हो गयी जिन्दगी

टुकड़े टुकड़े सी हो गयी जिन्दगी
लम्हा लम्हा मुश्किल जिन्दगी

लगी है आग ये कैसी धुंआ धुंआ सा है
हर एक खेल यारों थमा थमा सा है
उलझी उलझी सी हो गयी जिन्दगी
लम्हा लम्हा मुश्किल जिन्दगी

करीब आने की मुझको सजा मिली कैसी
किसी की शोख़ अदा ने ख़ता है की ऐसी
उलझे प्रश्नों सी हो गयी जिन्दगी
लम्हा लम्हा मुश्किल जिन्दगी

नया यह मोड़ है आया मेरे फ़साने में
लगी हजारों हैं सदियां उसे मनाने में
तिनके तिनके सी उड़ गयी जिन्दगी
लम्हा लम्हा मुश्किल जिन्दगी

किसी ने याद किया है कहा नहीं जाता
कैसा ये दर्दे ज़िग़र है सहा नहीं जाता
बिखरे पन्नों सी हो गयी जिन्दगी
लम्हा लम्हा मुश्किल जिन्दगी

ये कैसा इम्तहान-इम्तहान दोस्तों

.

ये कैसा इम्तहान-इम्तहान दोस्तों
ये कैसा इम्तहान इम्तहान दोस्तों
रूठी है वेवजह मेरी जान दोस्तों
रूठी है बेवजह मेरी जान दोस्तों

आया है बस्ती में कौन मुसाफिर ऐसा
रहता है छिप छिप के करता जुल्म कैसा
कहने को बेजुवान बेजुवान दोस्तों
रूठी है वेवजह मेरी जान दोस्तों

करता मैं फ़रियादें उसको ख़ुदा माना
तक़दीर समझता मैं उसको ज़िग़र माना
ये कैसा मेहमान मेहमान दोस्तों
रूठी है वेवजह मेरी जान दोस्तों

मिलकर मुझे लूटा है अपने हमजोली ने
बचा कुछ नहीं यारों अब मेरी झोली में
ये कैसा इन्तक़ाम इन्तक़ाम दोस्तों
रूठी है वेवजह मेरी जान दोस्तों

वो कहे खुशी से गर मैं जान भी दे दूं
उसे ग़िला अगर मुझसे ये उम्र उसे दे दूं
कब तक यूं इन्तजार इन्तजार दोस्तों
रूठी वेवजह मेरी जान दोस्तों

हवायें ताज़ा ताज़ा थी किसी ने घोला ज़हर आज

हवायें ताज़ा ताज़ा थी किसी ने घोला ज़हर आज
हवायें ताज़ा ताज़ा थी किसी ने घोला ज़हर आज
दिशायें महकी महकी थी किसी ने घोला ज़हर आज
दिशायें महकी महकी थी किसी ने घोला ज़हर आज

मैं सोचता वो सोचती कोई रास्ता अब है नहीं
मैं देखता वो देखती सूनी डगर कोई है नहीं
निग़ाहें रोज़ मिलती थी किसी ने घोला ज़हर आज
दिशायें महकी महकी थी किसी ने घोला ज़हर आज

अंजाम जाने वो ख़ुदा हर चीज मुझसे है ज़ुदा
अरमान दिल के हो रहे रफ़्ता रफ़्ता हैं फ़नाह
पी हमने जमकर हाला थी किसी ने घोला ज़हर आज
दिशायें महकी महकी थी किसी ने घोला ज़हर आज

परदा नहीं करते सनम अपनों ने ही पर्दा किया
पीकर नहीं बहका सनम अपनों ने ही बहका दिया
लड़ाई ख़ामोख़्वाह थी किसी ने घोला जहर आज
दिशायें महकी महकी थी किसी ने घोला ज़हर आज।

ए जिन्दगी समझौता कर लिया कर लिया

ए जिन्दगी समझौता कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता
ए जिन्दगी समझौता कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता
अरे इस तरह ग़म थोड़ा कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता
अरे इस तरह ग़म थोड़ा कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता

चलते चलते मिलते मिलते बन जायेगी दास्तां
कहते सुनते कहते सुनते मिले ज़मीं और आसमां
ले हर घड़ी दिल छोटा कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता
अरे इस तरह ग़म थोड़ा कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता

अव भी लगता है कुछ ऐसा जानम तू पास है
पलकों ही में रहने वाली तुझमें क्या ख़ास है
ए शायरी यह कैसा लिख दिया लिख दिया रफ़्ता रफ़्ता
अरे इस तरह ग़म थोड़ा कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता

एक दिन फिर वो आयेगा आज नहीं कल कभी
अफसाना बन जायेगा होगी शमा पास कहीं
ए जिन्दगी परवाना चल दिया चल दिया रफ़्ता रफ़्ता
अरे इस तरह ग़म थोड़ा कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता

शब्दों की ये फुलझड़ियाँ मैं लाया तेरे वास्ते
अनदेखी सी कुछ घड़ियाँ मैं लाया तेरे वास्ते
ए दिलनशीं यादों का शुक्रिया शुक्रिया रफ़्ता रफ़्ता
अरे इस तरह ग़म थोड़ा कर लिया कर लिया रफ़्ता रफ़्ता।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

इस समय सम्पूर्ण विश्व कोरोना की महामारी से जूझ रहा है। दिन प्रतिदिन यह बीमारी विकराल रूप धारण करती जा रही है। हमारे देश के माननीय प्रधानमन्त्री ने इससे बचाव का सर्वोतम तरीका सुझाया सोसल डिस्टेन्सिंग। इसके लिये लॉकडाउन कर घरों में रहने की सलाह दी गयी।

ऐसे समय में कलमकारों ने अपनी लेखनी को विराम न देकर समाज को अपने कलम के जादू से जागृत किये रखा है। साथ ही समाज का मनोरंजन भी होता रहे इसका भी प्रयास किया है।

अन्तरा से जुड़े सभी साहित्यकार बधाई के पात्र हैं। साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से समाज को बांधने में सक्षम हैं। दूरदर्शन के उपरान्त संचार का कोई कारगर माध्यम है तो वह मोबाइल है। जहाँ साहित्यकार और पाठक में सीधा सम्बन्ध है। पाठक साहित्यकार के लेखन पर अपनी टिप्पणी के माध्यम से उसका हौसला बढ़ाता है अथवा यदा कदा उसकी त्रुटियों से उसे अवगत कराता रहता है।

इन्हीं शब्दों के साथ सभी मित्रों के सुखद एवम् स्वस्थ भविष्य की शुभकामनाओं के साथ...

रचनाकार
कैलाश चंद्र यादव
म.नं.४००, मौ. कटरामालियान,
नियर काका स्वीट्स,
काशीपुर जिला ऊधमसिंह नगर
पिन २४४७१३ (उत्तराखण्ड)
Mobile - 9027333919, 9458937977

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-154-1
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/